डॉ· सरदार मुजावर
एम·ए·,एम·फिल·,पीएच्·डी·
हिन्दी प्रपाठक, हिन्दी विभाग,
किसन वीर महाविद्यालय,
वाई, जि· सातारा (महाराष्ट्र)·

प्रमाणपत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि प्रा·सुश्री लता गुरव ने शिवाजी विश्वविद्यालय की एम्·फिल्·(हिन्दी) उपाधि के लिए "**आधुनिक हिंदी कविता में ग़ज़ल (सामाजिक और राजनीतिक सन्दर्भ में)** शीर्षक से प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध मेरे निर्देशन में सफलतापूर्वक पूरे परिश्रम के साथ पूरा किया है। यह शोधार्थी की मौलिक कृति है। जो तथ्य इस लघु-शोध-प्रबंध में प्रस्तुत किये हैं, मेरी जानकारी के अनुसार वे सही हैं। प्रा·सुश्री लता गुरव के प्रस्तुत शोध-कार्य के बारे में मैं पूरी तरह सन्तुष्ट हूँ।

डॉ·सरदार मुजावर
शोध-निर्देशक

वाई·
दिनांक - 23·6·96

संस्तुति

हम संस्तुति करते हैं कि इस लघु-शोध-प्रबंध को परीक्षा हेतु अग्रेषित किया जाए।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबन्ध कला-विद्या-शाखा के अंतर्गत हिन्दी विषय से संबंधित आधुनिक काव्य-विधा में सन्निविष्ट है।

प्राचार्य
लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय,
सातारा.

डॉ. गजानन सुर्वे
रीडर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय,
सातारा.

सातारा
दिनांक - 23-6-1996

(हिन्दी विभाग)

अध्यक्ष
हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर - ४१६००४

प्रस्थापन

यह लघु-शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम्.फिल्., के लघु-शोध-प्रबंध के रूप में प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले इस विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

Gurav

प्रा. लता गुरव
एस्. एम्. कॉलेज,
खानापूर.

खानापूर
दिनांक - 28. 6. 1996

भूमिका

एम्· फिल· की उपाधि के लिए मैंने हिन्दी ग़ज़ल (सामाजिक और राजनीतिक संदर्भ में) यह विषय चुना हैं। मैंने यह विषय क्यों चुना ? इसका कारण यह है कि मुझे शुरू से ही "कविता" बहुत पसंद है। गद्य की तुलना में पद्य हर संवेदनशील मनुष्य को अधिक प्रभावित करता है। हिन्दी कविता की विकास-यात्रा में आज "ग़ज़ल" महत्वपूर्ण पड़ाव है। आजकल चारों ओर ग़ज़लों की धूम मची हुई हैं।

वास्तव में "दर्द" जीवन की सच्ची पहचान है और इसी "दर्द" की अभिव्यक्ति ग़ज़ल की जान हुआ करती है। इसी "दर्द" के कारण मुझे "गालिब" के शेर प्रभावित करते रहे। इसलिए ग़ज़ल के प्रति मेरा लगाव शुरू से ही रहा है। अब "दर्द" वैयक्तिक भी हो सकता है और सामाजिक भी। वैयक्तिक दर्द की तुलना में सामाजिक दर्द ज्यादा असर करता है। इसीलिए हिन्दी ग़ज़ल "सामाजिकता तथा राजनीति को कहाँ तक व्यक्त कर पाई है ? " शोध कार्य की दृष्टि से इसका अध्ययन करने का मैंने निश्चय किया।

इस शोधकार्य के लिए मैंने प्रातिनिधिक ग़ज़लकारों की रचनाएँ चुन ली है। ये ग़ज़लकार हैं - दुष्यन्तकुमार, चन्द्रसने विराट, कुँअर बेचैन, रामकुमार कृषक और जहीर कुरेशी। रचनाएँ है - "साये में धूप", "आस्था के अमलतास", "शामियाने काँच के", "नीम की पत्तियाँ" , "चाँदनी का दुःख" और "समंदर ब्याहने आया नहीं है। प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध पाँच अध्यायों में विभाजित है।

प्रथम अध्याय में "कविता और समाज का परस्पर सम्बन्ध" है। इसमें हिन्दी कविता की विकास-यात्रा में आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक समाज-परिवर्तन के साथ कविता में भी जो परिवर्तन आयें उसका विवेचन है।

दितीय अध्याय है - "आधुनिक हिन्दी कविता में ग़ज़लों का स्वरूप"। इस अध्याय में हिन्दी ग़ज़ल के उद्‌भव तथा स्वरूप को व्यक्त करने की कोशिश की है। साथ ही हिन्दी ग़ज़लों की विशेषताओं को स्पष्ट करने की कोशिश है।

तृतीय अध्याय है - "आधुनिक हिन्दी ग़ज़लों का सामाजिक सन्दर्भ"। इस अध्याय में प्रातिनिधिक ग़ज़लकार -चन्द्रसेन विराट, दुष्यन्तकुमार, रामकुमार कृषक, डॉ॰ कुँअर बेचैन और जहीर कुरेशी इनकी रचनाओं की सामाजिकता का विवेचन है।

चतुर्थ अध्याय है - "आधुनिक हिन्दी ग़ज़लों का राजनीतिक सन्दर्भ। इस अध्याय में उन्हीं चुनी हुई रचनाओं का राजनीतिबोध की दृष्टि से विवेचन है।

पंचम अध्याय है - "उपसंहार"। इसके अंतर्गत लघु-शोध-प्रबंध का सारतत्व तथा लघु शोध प्रबंध की उपलब्धियाँ हैं।

आभार प्रदर्शन की परम्परा को ध्यान में रखते हुए मैं सबसे पहले मेरे शोध-निर्देशक डॉ॰सरदार मुजावर की आभारी हूँ। श्रध्येय डॉ॰सुर्वेजी के आत्मीय सहयोग के लिए मैं उनकी भी आभारी हूँ। साथ ही शोध कार्य करते समय लाल बहादुर शास्त्री कॉलेज के प्रिन्सिपल पुरूषोत्तम सेठ तथा श्री॰बाळेकुंद्री, श्री॰बर्गे, कॉलेज के ग्रन्थपाल श्री॰माळी, श्री॰जगताप, श्री॰पाटील तथा ग्रन्थालय के अन्य कर्मचारी आदि सभी ने समय समय पर मेरी मदद की है। उन सब की मैं आभारी हूँ। साथ ही सुश्री सईदा मुजावर और सुश्री सुर्वेजी की भी मै हृदय से आभारी हूँ। डॉ॰सुर्वेजी की बेटी कामायनी की भी मैं दिल से आभारी हूँ।

प्रस्तुत शोधकार्य में मेरे कॉलेज के प्रिन्सिपल श्री॰जाधव तथा सहयोगी श्री सुभाष मोरे, श्री॰निकम, श्री॰काशिद, श्री॰देवकाते, श्री॰ शिंदे, श्री॰पाटील, श्री॰जाधव, श्री॰बिराजदार आदि ने मुझे समय समय पर प्रोत्साहित कर सहायता की। उनकी भी मैं आभारी हूँ।

प्रस्तुत शोध कार्य में आटपाटी कॉलेज के प्रिन्सिपल श्री·महाजन तथा ग्रंथपाल, बळवंत कॉलेज के ग्रंथपाल आदि ने किताबें देकर मेरी मदद की जिसके बिना मेरा शोध कार्य अधुरा रहता। उनकी भी मैं तहे-दिल से आभारी हूँ।

प्रस्तुत शोध कार्य में शिवाजी विश्व विद्यालय, हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डॉ·पी·एस्· पाटोल इन्होंने भी समय समय पर मेरा पथ प्रदर्शन किया। इनकी भी मैं आभारी हूँ। मेरी सहेली कु·शोभा गोरे तथा उनके परिवार ने भी मेरी सहायता की। उनकी भी मैं तहे-दिल से आभारी हूँ।

आत्मीयता और तत्परता से कम वक्त में प्रबंध का टंकन-लेखन करनेवाले **"मे·रिलॅक्स सायक्लोस्टायलिंग, सातारा"** के श्री·मुकुंद ढवले और उनके सहयोगी श्री· राजू कुलकर्णी और श्री·सुशीलकुमार कांबले के प्रति मैं हमेशा कृतज्ञ रहूँगी।

अन्त मे मैं अपने परिवार के लागों का आभार मानती हूँ जिनके सहयोग के बिना मेरा शोध कार्य संभव नही था। विशेष रूप से मेरे पिताजी, मेरी माताजी, भाई सुरेन्द्र तथा मेरे पति इनका मुझे सहयोग तथा प्रोत्साहन मिला। मेरे अनवरत प्रयत्नों के कारण आज मैं अपना यह लघु-शोध-प्रबंध प्रस्तुत कर रही हूँ। इसलिए मुझे हार्दीक प्रसन्नता हुयी है।

दिनांक : 28/06/ 1996

स्थल :

प्रा·सुश्री लता गुरव

शोध-छात्रा